Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 03, March. 2025

संस्कृत लोकगीत परम्परा में पद्मश्री प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र का अवदान

अरुण कुमार निषाद *
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय द्वारिकागंज,
कटकाखानपुर, सुल्तानपुर।

Abstract

लोकगीत वे सहज और स्वाभाविक गीत होते हैं जो लोकजीवन की संस्कृति, संस्कारों, त्यौहारों, ऋतुओं, और सामाजिक गतिविधियों के अवसर पर गाए जाते हैं। इन्हें किसी विशेष रूप से प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि आम जनता द्वारा रचा और गाया जाता है। लोकगीतों की परंपरा श्रुति आधारित होती है, अर्थात वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित होते हैं। लोकगीतों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जैसे संस्कार गीत, कृषि गीत, ऋतु गीत, वीर गीत, विवाह गीत आदि। लोकगीतों के संबंध में कई विद्वानों ने परिभाषाएँ दी हैं। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने इन्हें किसी संस्कृति का "मुँह बोलता चित्र" बताया है, जबकि पं. रामनरेश त्रिपाठी ने इन्हें "प्रकृति के उद्गार" कहा है। इन गीतों के माध्यम से ग्रामीण जनजीवन की भावनाओं, रीति-रिवाजों और परंपराओं को समझा जा सकता है। लोकगीत क्षेत्रीय और जातीय विविधताओं के अनुरूप भिन्न होते हैं। विभिन्न क्षेत्रों के अपने विशिष्ट लोकगीत होते हैं, जैसे बाउल गीत बंगाल में, पंडवानी छत्तीसगढ़ में, रागिणी गीत हरियाणा में, और अभंग गीत महाराष्ट्र में। कजरी, जो मुख्य रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्रचलित है, वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला प्रमुख लोकगीत है जिसमें विरहिणी नायिका अपने प्रियतम को उलाहना देती है।

Keywords: लोकगीत, श्रुति परंपरा, संस्कार गीत, ऋतु गीत, वीर गीत, अभंग.

सहज,स्वाभाविक ढंग से निकले हुए लोकोद्गार, जो हमारे सामाजिक जीवन के विविध संस्कारों और क्रियाकलापों, उत्सवों, त्यौहारों ऋतुओं के अवसर पर गाये जाते हैं लोकगीत हैं | दूसरे शब्दों में लोकगीत वे हैं जो लोक प्रचलित होते हैं और उनकी अपनी अन्तर्वस्तु लोक की होती है | लोकगीतों का लेखक या गायक कोई प्रशिक्षित या उच्च डिग्रीधारी, डिप्लोमाधारी पढ़ा-लिखा व्यक्ति नहीं होता, इसके कलाकार अशिक्षित या कम पढ़े-लिखे लोग होते थे | जो अपने सुख-दुःख में, हर्ष-उल्लास, में इन गीतों द्वारा अपने मनोभावों को व्यक्त करते थे | लोकगीत श्रुति परम्परा पर आधारित था | वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानान्तरित होता रहता था | दादी-नानी ने इसे अपने पूर्वजों से सीखा और अपने बच्चों को सिखाया |

लोकगीत की परिभाषा-

डॉ.वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार ‘लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते चित्र हैं ।’

---

* Corresponding Author: Arun Kumar Nishad
Email: arun.ugc@gmail.com
Received 10 March. 2025; Accepted 21 March. 2025. Available online: 30 March. 2025.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

पं.रामनरेश त्रिपाठी के शब्दों में – ‘ ग्रामगीत प्रकृति के उद्गार हैं। इसमें अलंकार नहीं केवल रस है। छन्द नहीं केवल लय है लालित्य नहीं केवल माधुर्य है। ग्रामीण मनुष्य के स्त्री-पुरुषों के मध्य हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति गान करती है। प्रकृति के यही गान ग्रामगीत हैं।’

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि **गिरजाकुमार माथुर** के विचारों में “लोकगीत जीवन की सामूहिक चेतना का फल होता है और वे जनता के सामाजिक प्रयोजन से नि:सृत होते हैं | लोकगीतों को समझने से जनता की संस्कृति और परम्परा को समझा जा सकता है |”

प्रसिद्ध विद्वान **ग्रियम** ने लिखा है- ‘लोकगीत तो स्वत: जन्मा है।’

पेरसी लिखते हैं कि- “आदिमानव के उल्लासमय संगीत को ही लोकगीत कहते हैं।”

पण्डित रामनरेश त्रिपाठी ने उसका वर्गीकरण इस प्रकार किया है -1.संस्कार सम्बन्धी गीत 2.चक्की और चरखे के गीत 3.धर्म गीत 4.ऋतु सम्बन्ध गीत 5.खेती तथा मेले के गीत 6.जाति गीत 7.वीर गीत 9.अनुभव के वचन |

राजस्थानी लोकगीतों के विद्वान पण्डित **सूर्यकरण पारीक** ने लोकगीतों को 29 भागों में विभक्त किया है-

1.देवी-देवताओं के गीत

2.ऋतुओं के गीत

3.तीर्थों के गीत

4.व्रत उपवास और त्यौहारों के गीत

5.संस्कारों के गीत

6.पति-पत्नी के गीत

7.विवाह के गीत

8.साली (सरहज) के गीत

9.भाई-बहन के प्रेम गीत

10.पनिहारिनों के गीत

11.प्रेम के गीत

12.चक्की पिसाते के समय के गीत

13.बालिकाओं के गीत

14.चरखे के गीत

15.प्रभावी गीत

16.राधा कृष्ण के प्रेम गीत

17.धमाके होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा गेय गीत

18.देश प्रेम के गीत

19.राजकीय गीत

20.राजदरबार,मजलिस,शिकार,दारू के गीत

21.जन्म के गीत (वीरों सिद्ध पुरुषों, महात्माओं की स्मृति में रखे गए जागरण को 'जम्मा' कहते हैं)

22.सिद्ध पुरुषों के गीत

23.वीरों के गीत

24.ऐतिहासिक गीत (क) ग्वालों के गीत (ख) हास्य रस के गीत

25.पशु-पक्षी सम्बन्धी गीत

26.शान्त रस के गीत

27.गाँवों के गीत

28.नाट्य गीत

29.विविध |

लोकगीत के सम्बन्ध में **पद्मश्री प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र (अभिराजयशोभूषणम्' में)** का कथन है-

लोकेन सङ्गीतशास्त्रज्ञानविरहितेन प्राकृतजनेन गीतं लोकगीतम् । यद्वा लोकानां ग्रामग्रामटिकाग्रहाराणां गीतं लोकगीतम् । किमस्य लोकगीतत्वमिति सम्प्रत्युच्यते-यदिदं गीतं यथाजनपदग्रामकुलजातिपरम्परंकिञ्च, यथाकण्ठं यथासुखं गीयते। तत्र जनपदोदाहरणं यथा रसिकाख्यं लोकगीतं व्रजेष्वेव गीयते न तावत्कोसलेषु । बाउलगीतं बङ्गेष्वेव, पण्डवानीगीतं महाकोसलेष्वेव, रागिणीगीतं

हरियाणाक्षेत्रेष्वेव, सूतगृह- नक्तक- प्रचरण-वटुक-स्कन्धहारीय - चैत्रक - फाल्गुनिकादीनि उत्तर- प्रदेशेष्वेव, दण्डरासकगीतं (डाँडियेति भाषायाम्) गुर्जरेष्वेव, अभङ्गाख्यं गीतं महाराषेष्वेव गीयन्ते। कलजातिपरम्परापराणि गीतान्यपि मिथोभिद्यन्ते। उत्तरभारते आभीर नापित-कुम्भकार- रजकादीनां पृथग्जातीय- गीतानि भवन्ति।[1]

लोक के द्वारा अर्थात् संगीतशास्त्र के ज्ञान से विरहित सामान्य जनों (ग्रामवासियों) द्वारा गाया जाने वाला (गीत) लोकगीत (Folk Song) है। अथवा लोक का (जवार अथवा गाँव-गिराँव-पुरवे) का गीत लोकगीत है। इसका लोकगीतत्व क्या है? अब इसे बताया जा रहा है-

चूँकि यह गीत जनपद, गाँव, कुल तथा स्वजातीय परम्परा के अनुसार, कण्ठध्वनि-वैशिष्ट्य के साथ, स्वाभाविक पद्धति से गाया जाता है (इसीलिये) इसे लोकगीत कहते हैं।

जनपद का उदाहरण जैसे रसिक (रसिया) नामक लोकगीत व्रजक्षेत्र (मथुरा-वृन्दावन) में ही गाया जाता है न कि कोसल क्षेत्र में। बाउल गीत बंगाल में ही, पण्डवानी गीत महाकोसल (छत्तीसगढ़) में ही, रागिणी गीत हरियाणा इलाके में ही, सूतगृह (सोहर) नक्तक (नकटा) प्रचरण (पचरा) वटुक (बरुआ) स्कन्धहारीय (कहँरवा) चैत्रक (चैता) फाल्गुनिक (फाग) आदि उत्तरप्रदेश में ही, दण्डरासकगीत (जनभाषा में डाँडिया रास) गुजरात में ही, तथा अभंग नामक गीत महाराष्ट्र क्षेत्र में ही गाया जाता है।

कुल, जाति की परम्परा वाले (लोक) गीत भी एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। । उत्तर भारत में आभीर (अहीर) नापित (नाई) कुम्भकार (कुम्हार) तथा रजकादि (धोबियों) के पृथक्-पृथक् जातीय गीत होते हैं।

ऋतूनामागमं पर्व गृहमङ्गलमुत्सवम्।

धर्मसंस्कृतिरीतिं वा लोकगीतं समन्वति॥22॥[2]

लोकगीत (प्रायः) नूतन ऋतुओं की अगवानी, पर्व (तीज-त्योहार) घरेलू मंगल एवं उत्सव अथवा धर्म-संस्कृति एवं रीति-रिवाज के उपलक्ष्य में गाये जाते हैं।

कजरी- यह वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला लोकगीत है | यह पूर्वी उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध लोकगीत है, जिसमें विरही नायिका अपने प्रियतम को उलाहना देती है | मिर्जापुर की कजरी, बनारस की कजरी आदि बहुत प्रसिद्ध कजरी हैं | कवि नायक-नायिका के साथ-ही-साथ राधा-कृष्ण को भी अपने कजरी का पात्र बना देता है |[3] **प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र** के अनुसार कजरी का लक्षण है-

---

[1]अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ 256-257
[2]अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या 258
[3]वाग्वधूटी, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1978 ई., पृष्ठ 66

कोसलेषु च काशीसु गीयते हि घनागमे।

गीतिका कजरीनाम्नी नैकरागसमाश्रिता ॥23॥[4]

वियोगिन्या हि गीतेऽस्मिन् प्रोषितं नायकं प्रति।

उपालम्भाः प्रदीयन्ते विस्मृतिक्षोभकारकाः ॥24॥[5]

पावस ऋतु आने पर (सावन-भादों के महीनों में) कोसल एवं काशी क्षेत्र में, अनेक रागों पर आश्रित कजरी नामक लोकगीत गाया जाता है।

परदेशी नायक के प्रति विरहिणी नायिका के उलाहने इस गीत में अभिव्यक्त होते हैं जो कि नायक की विस्मृतिशीलता के प्रति (नायिका के) क्षोभ को प्रकट करते हैं।

कं पतिसाहचर्यजनितं सुखं जरयतीति भावबोधिनी गीतिः कजरीति मया व्याख्यातं स्वोपज्ञायां वाग्वधूट्याम्। घनागम एव गीयत इत्यु- पलक्षणम्। नैकरागसमाश्रितेति सोदाहरणं निरूपयिष्यते।

कम्' अर्थात् पति - साहचर्यजनित (रति) सुख को नष्ट करने वाली, वियोगभाव का बोध कराने वाली गीति कजरी है ऐसी व्याख्या मैंने अपनी (पूर्वप्रकाशित) कृति वाग्वधूटी में की है। वर्षाऋतु में ही कजरी गाई जाती है, यह उपलक्षण-मात्र है (अन्यथा कभी भी गाई जा सकती है)।

अनेक रागों (लयों) पर समाश्रित होती है (कजरी) इसका (अब) सोदाहरण निरूपण किया जायेगा।

1.रौति कोकिला मदालसा रसालतरौ

गोपिता तमालतरौ रे ! |[6]

2.राधा वादयति मुरलीमय! माधव! |[7]

3.नन्दनन्दनेन गोकुलं निकेतनीकृतं |[8]

[4]अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या 258
[5]वही पृष्ठ संख्या 258
[6]वही, पृष्ठ संख्या 259 (वाग्वधूटी), https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/vagvadhooti/index.htm
[7]वही, पृष्ठ संख्या 259 (वाग्वधूटी) https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/vagvadhooti/index.htm
[8]वही, पृष्ठ संख्या 261, (वाग्वधूटी) https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/vagvadhooti/index.htm

4.व्यालीव दशति धनरजनीं

दयितो नन्दनन्दनो न सदने ! |[9]

5.लघु लघु जलद! सलिलमभिवर्षय

हर्षय जगदविरामं रे ! |[10]

6.सखि रे! समागच्छति श्रावणमास उदारोऽयं |[11]

7.रिमझिम् वर्षति सजलजलधरो

नृत्यति केकी कानने ! |[12]

8.मेघो वितरति बहु बहु वारि भुवनसुखमातनुते |[13]

9.कान्तो नहि भवने जलदो हन्त गगने |[14]

फाल्गुनिक (फाग या फगुआ)- यह फागुन के महीने में गाया जाने वाला लोकगीत है | इसे होलीगीत भी कहते हैं |[15] **प्रो.'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र** इसका लक्षण इस प्रकार देते हैं –

गीयते फाल्गुने मासे फाल्गुनिकं गृहे-गृहे |

चतुस्तालादिभिर्भेदैर्होलिकोत्सवसङ्गतम् ||25||[16]

होलीगीतमपि प्रोक्तं ततो हर्षौघसम्भृतम् |

कुङ्कमैः पटवासैश्च वर्धितानन्दमङ्गलम् ||26||[17]

प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा लिखित कुछ होली गीत के उदाहरण इस उदाहरण इस प्रकार हैं-

---

[9]वही, पृष्ठ संख्या 260,(मृद्वीका) https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/mridvika/index.htm
[10]वही, पृष्ठ संख्या 260, (मृद्वीका) https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/mridvika/index.htm

[11]वही, पृष्ठ संख्या 261, (मृद्वीका) https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/mridvika/index.htm

[12]वही, पृष्ठ संख्या 261, (मृद्वीका) https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/mridvika/index.htm
[13]वही, पृष्ठ संख्या 262, (मधुपर्णी)
[14]अभिराजयशोभूषणम्,पृष्ठ संख्या 262
[15]अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ 265
[16]वही पृष्ठ संख्या 264
[17]वही पृष्ठ संख्या 264

1.करकमले लसति पिच्कारी

विहरति मुरारि: !![18]

2.मधुमासोऽभूद् वृन्दाविपिने....|[19]

3.मदयति हृदयं सुखयति सदनं ....|[20]

चैत्रक- उत्तर प्रदेश में चैत्र के महीने में गाया जाने वाला लोकगीत है | इसमें विरही नायिका अपने पति को उलाहना देती है |[21] इसका लक्षण प्रो.मिश्र जी इस प्रकार देते हैं –

चैत्रकं गीयते चैत्रे हर्षसम्मोदनिर्भरम्।

नवाऽन्नागमसम्भारसम्पदिङ्गितवैभवम् ||28||[22]

चैत्रकेऽपि क्वचिद् बाला कापि प्रोषितवल्लभा।

व्यनक्ति स्वीयमातङ्कं स्मरजं मार्मिकैः पदैः ||29||[23]

प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र 'वाग्वधूटी' में लिखते हैं –

विधुमभिसरति कुमुदिनी रे मात: किमु करवाणि ?

प्रोषितपतिका विरहिणी रे मात: किमु करवाणि ?

पवनो वहति मलयगिरिसूत:

रेवातटगतवञ्जुलपूत:

वितरति सुममुध नलिनी रे मात: किमु करवाणि ?[24]

---

[18]मृदीका, https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/mridvika/index.htm 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1985 ई., पृष्ठ 27
[19]वही https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/mridvika/index.htm अभिराजयशोभूषणम्, अभिराज' राजेन्द्र मिश्र पृष्ठ संख्या 265
[20]अभिराजयशोभूषणम्,प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1985 ई., पृष्ठ पृष्ठ 265 (श्रुतिम्भारा)
[21]आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा, डॉ. मञ्जुलता शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 249
[22]अभिराजयशोभूषणम्,पृष्ठ संख्या 267
[23]अभिराजयशोभूषणम्, पृष्ठ संख्या 267
[24]वाग्वधूटी, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1978 ई., पृष्ठ संख्या 61, https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/vagvadhooti/index.htm

सोहर (सूतगृहगीत)-शिशु के जन्म के समय गाया जाने वाला लोकगीत है | पद्मश्री प्रो.ब्रजेश कुमार शुक्ल ने इसे 'शोभरगीत' कहा है | इसका लक्षण प्रो.मिश्र जी इस प्रकार देते हैं-

पुत्रजन्मविवाहादिमङ्गलावसरे पुनः ।

गीयते ननु नारीभिर्गीतं सूतगृह्यभिधम् ||30||[25]

प्रो.मिश्र जी ने 'वाग्वधूटी' काव्य संग्रह में सोहर (सूतगृहगीत) का उदाहरण इस प्रकार दिया है-

दुरतानि विधुतानि कुरुते शुभानि साधु विदधाति रे !

गङ्गे तव नीरगाहनं वितनुते विवुधलोकमनुयाति रे !![26]

बटुकगीत- इसका दूसरा नाम 'बरुआ' या 'बरुवा' है | यह छत्तीसगढ़ का लोकगीत है जो उपनयन संस्कार के समय गाया जाता है |[27]

यज्ञसूत्रोत्सवे रम्यं वटुभिक्षाशयात्मकम् ।

वटुकं वटुगीतं वा लोकगीतं महीयते ||31||[28]

एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

अवलोक्य वामनवदुकमदितिरथ कथयति रे ।

नाथ! तनयमिमं पठनाय गुरुभवनमुपनय रे !! |[29]

प्रचरणगीत (पचरा)- मुख्यरूप से यह गीत नवरात्रि में दुर्गा जी स्तुति में गाया जाता है | परन्तु माङ्गलिक अवसरों पर भी इसे गाये जाने का प्रचलन है |[30]

समागते विवाहेऽथ विविधाशयभाञ्जि हि।

---

[25]अभिराज यशोभूषणम् पृष्ठ संख्या 267

[26]वाग्वधूटी, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1978 ई., पृष्ठ संख्या 73, https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/vagvadhooti/index.htm

[27]आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा, डॉ. मञ्जुलता शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 263

[28] अभिराजयशोभूषणम्, पृष्ठ संख्या 268

[29]वही पृष्ठ संख्या 269

[30]अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या 270

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 03, March. 2025

लोकगीतानि गीयन्तेऽङ्गनाभिः प्रायशो निशि ||32||[31]

तत्रादौ प्रचरणं तद्गीयते मङ्गलात्मकम् ।

सर्वदेवकुलग्रामदेवताऽऽमन्त्रणात्मकम् ||33||[32]

यतो ह्यनेन गीतेन प्रचारः क्रियते मुदा ।

मङ्गलोत्सवकृत्यस्य ततश्चेदं प्रचारणम् ||34||[33]

इस उदाहरण प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र ने इस प्रकार दिया है –

कस्य पादपोऽयमस्ति कस्य वाऽथ दोरकं विभाति मञ्जुलम्

का नु दोलनाधिरूढा साम्प्रतंविराजते? !![34]

नक्तक (नकटा)- शादी ब्याह में जब बारात वधू के घर चली जाती है तो रात के समय महिलायें मनोविनोद के लिए जो गीत गाती है उसे 'नक्तक' कहते हैं |[35]

कन्यागृहं गतेष्वेव पुरुषेषु गृहस्त्रियः ।

नृत्यन्त्यो निशि गायन्ति लोकगीतं हि नक्तकम् ||35||[36]

रागैर्लयैश्च शब्दार्थैर्विविधैर्हि मनोहरैः ।

सनृत्यं गीयते स्त्रीभिर्नक्तकं ललितक्रमम् ||36||[37]

नक्तक (नकटा) के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -

1.त्वदीयवदनं मया दिने-दिने पीतम!! |[38]

[31]वही पृष्ठ संख्या 269
[32]वही पृष्ठ संख्या 269
[33]वही पृष्ठ संख्या 269
[34]मधुपर्णी 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2000 ई., पृष्ठ 29
[35]अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ 271
[36]वही पृष्ठ संख्या 271
[37]वही पृष्ठ संख्या 271
[38]वही पृष्ठ संख्या 271

2.भ्रमर ! तव चिन्तितं नहि जाने ! |[39]

3. मनो नित्यं विधत्ते तव स्मरणम् !

यथा दीनोऽसहायो व्रजति शरणम् !! |[40]

उत्थापन (उठान)- माङ्गलिक अवसरों पर महिलायें चलते-चलते जो अन्तिम गीत गाती हैं वह 'उत्थापन' होता है |

रमण्यः प्रतिवेशिन्य उत्सवस्य समापने ।

उत्तिष्ठन्त्योऽपि गायन्ति किमप्यन्तिमगीतकम् ||37||[41]

हास्याभिनयनाट्यादिसन्ततं मोदसम्भृतम्।

गीतं तदुच्यते रम्यं मङ्गलोत्थानगीतकम् ||38||[42]

प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र ने 'मृद्वीका' में एक 'उत्थापनगीत' लिखा है –

अभिरुचितं सततं कृतम्मया

अभिरुचितम् ![43]

इसका (उत्थापन या उठान) एक अन्य उदाहरण प्रो. मिश्र ने 'अभिराजयशोभूषणम्' में दिया है-

विकसित नहि कुसुमं दिने-दिने !

विलसति नहि विपिने दिने-दिने !![44]

लाङ्गुलिक (लाङ्गुरिया)- खेतों में हल चलाता हुआ किसान अपनी और बैलों की थकान मिटाने के लिए जो गीत गाता है, उसे लाङ्गुलिक कहते हैं |[45]

लाङ्गलेन धरां कर्षन् स्वेदसिक्तकलेवरः ।

---

[39] वही पृष्ठ संख्या 271

[40] वही पृष्ठ संख्या 272

[41] अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या 272

[42] अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या 272

[43] अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या272, https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/mridvika/index.htm

[44] अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या273

[45] अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या 274

हलवाहोऽपि यद्गीतं गायति प्रोन्मदो मुदा ||39||[46]

खेदं स्वकं लघुकर्तुं मन्ये वृषभयोरपि ।

शृण्वताञ्च मनोरञ्जि लाङ्गलिकं तदुच्यते ||40||[47]

अपने काव्यसंग्रह 'मृद्वीका' में प्रो.मिश्र जी ने लाङ्गुलिक (लाङ्गुरिया) का उदाहरण इस प्रकार दिया है-

विद्याध्ययनं विना व्यतीतम्

यस्याभिमतं नो सङ्गीतम् !![48]

स्कन्धहारीयम्- बोलचाल कीभाषा में इसको कँहरवा (कँहरउवा) कहा जाता है | प्राचीन समय में डोली (शिविका) ढोने वाले अपनी थकान को मिटाने के लिए यह गीत गाते थे |[49] प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र इसका लक्षण इस प्रकार देते हैं-

वहन्तश्शिविकां गुर्वीमेवमेव हि वाहकाः ।

गायन्ति स्कन्धहारीयं समवेतस्वरोच्चयैः ||41||[50]

अध्वश्रमापनोदीदं गीयमानं क्रमेण च ।

स्कन्धहारीयमाख्यातं वधूट्याश्चापि मोददम् ||42||[51]

'वाग्वधूटी' में इसका(स्कन्धहारीयम्) एक उदाहरण इस प्रकार है-

नभसि विभाति चमत्कृतचन्द्रो भाति चन्द्रमसिछाया |

सरसि विभाति सरागकमलिनी कमलिन्यामलिजाया !![52]

'मृद्वीका' काव्यसंग्रह से 'स्कन्धहारीयम्' का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

---

[46]वही पृष्ठ संख्या 274
[47]वही पृष्ठ संख्या 274
[48]मृद्वीका, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1985 ई., पृष्ठ संख्या 11, https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/mridvika/index.htm
[49]आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा, डॉ. मञ्जुलता शर्मा, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान दिल्ली प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2011, पृष्ठ संख्या 261
[50]वही पृष्ठ संख्या 275
[51]वही पृष्ठ संख्या 275
[52]वाग्वधूटी, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1978 ई., पृष्ठ 28, https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/vagvadhooti/index.htm

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 03, March. 2025

मन्दं मन्दं विरावं रे कुरुतेऽयं पिक:

चित्रं चित्रं प्रभावं रे कुरुतेऽयं पिक: !![53]

औष्ट्रहारिक (ऊँटहारागीत)- ऊँट के व्यापारियों द्वारा गाये जाने वाले गीत को औष्ट्रहारिक गीत कहते हैं |[54] प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने इसका लक्षण इस प्रकार दिया है-

रात्रौ क्रमेलकारूढाः सार्थवाहा यथाक्रमम् ।

तन्द्रां निद्रामपाकर्तुं यच्च गायन्ति गीतकम् ||43 ||[55]

तदौष्ट्रहारिकं गीतं लयवाहि समुच्यते ।

शृण्वतां पामराणां च हृदयोन्मादकारकम् ||44||[56]

इसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

नयने न करुणा हृदि न तव ममता रे ! प्रियतम ! किमसि कठोर!

दयिता विरहिणी सलिलहीनशफरीव विकलीभवति चित्तचोर !![57]

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि- इन गीतों में उल्लास-विषाद, आशा-निराशा, विवशता-आकांक्षा, चिन्ता-मस्ती आदि भावनाओं को व्यक्त करने वाले सहज उद्गार हैं | इसमें हमारी संस्कृति, सामाजिक इतिहास तथा जीवन के सजीव चित्र मुग्धकारी रूप में प्रस्तुत किये गये हैं |

[53]मृद्वीका, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1985 ई., पृष्ठ 21, https://www.sanskrit.nic.in/ASSP/mridvika/index.htm
[54]अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ 276-277
[55]अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या 277
[56]अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या 277
[57]अभिराजयशोभूषणम्, 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र, वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 ई., पृष्ठ 276-277